Notification No. : F.NO. COE/Ph.D/(Notification)/562/2024

Notification dt. : 24-07-2024

Name of Scholar : Priya

Name of the surpervisor: Prof. D.K.Shakya

Name of Department : Hindi

Enrollment No. : 18-05866

Topic of Research : KEDARNATH SINGH KI KAVITA ME ABHIVYAKT SAMAJIK PARIVESH KA AALOCHNATMAK ADHYYAN

संक्षिप्त शोध-सार(finding)

बीज शब्द : केदारनाथ सिंह, सामाजिक परिवेश, ग्रामीण सामाजिक परिवेश, नगरीय जीवन, काव्य-भाषा

सामाजिक परिवेश सामाजिक संबंधों एवं स्थिति-परिस्थितियों का वह आवरण है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की ओर उन्मुख होता है। सामाजिक परिवेश मनुष्य को समाज के रहन-सहन, परंपरा, रीति-रिवाज, बोलचाल व अनुभव का व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक प्रारूप प्रदान करता है जिसके फलस्वरुप मनुष्य अपने नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों के क्रमिक विकास की ओर प्रशस्त हो पाता है। 'परिवेश के सजग कवि' के रूप में प्रतिष्ठित कवि केदारनाथ सिंह की कविताएँ युगीन सामाजिक परिवेश की सशक्त अभिव्यंजना करती हैं। मानव और मानवेतर जीवन के प्रतिनिधि कवि केदारनाथ सिंह की कविताएँ परिवेश के तत्वों को निर्मित ही नहीं करती बल्कि अपनी युगीन सामाजिक स्थितियों एवं परिस्थितियों से गहरे रुप से परिष्कृत व संचरित भी हुई हैं। समाज के विविध परिवेश की सशक्त अभ्यर्थना करती इनकी कविताएँ संवेदना के गहरे अर्थ को प्रतिपादित करती है।

केदारनाथ सिंह विशेषतः परिवेश के कवि रहें हैं। गाँव-कस्बें, नगर-महानगरों के विविध सामाजिक परिवेश से संबंधित रहनें के फलस्वरूप इनकी कविताओं पर परिवेशीय प्रभाव को स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। लोक जीवन से भावनात्मक रूप से जुड़े इस कवि के गाँव के परिवेश ने उनके काव्य की आधार भूमि तैयार की। ग्रामीण सामाजिक परिवेश को अभिव्यक्त करती इनकी कविताओं में मानव और मानवेत्तर संबंधों की अभ्यर्थना मिलती है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में गाँव के बदलते सामाजिक परिवेश की सशक्त अभिव्यक्ति भी मिलती है। ग्रामीण लोगों की खत्म होती सामूहिकता एवं रीति-रिवाजों के प्रति उदासीनता का परोक्ष वर्णन उनकी कविताओं जैसे 'गाँव आने पर','विकास-कथा,' में मिलता है। खत्म होती कृषक एवं लघु श्रम संस्कृति के कारण गांव में उत्पन्न होती बेरोजगारी, पूंजीवादी व्यवस्था ,मजदूरी, प्राकृतिक आपदाओं से छिन्न-भिन्न जीविका, जातिगत भेदभाव, विस्थापन जैसी सामाजिक विसंगतियों का यथार्थ वर्णन इनकी कविताओं में हुआ है।

पडरौना, गोरखपुर, बलिया के कस्बाई समाज के निम्न-मध्यमवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करती इनकी कविताओं में प्रकृति एवं कस्बाई जीवन-अनुराग की समरसता, मानवीय संबंधों की सहजता, साधारण लोगों की संघर्षशीलता, सहनशीलता, सामाजिक -आर्थिक विसंगतियों का सापेक्षिक वर्णन मिलता है। भारतीय नगरों के सामाजिक परिवेश की सशक्त अभ्यर्थना के साथ विविध संस्कृतियों के समायोजन एवं आत्मीयता के भाव इनकी कविताओं में उत्पन्न होते दिखाए देते हैं। परिवेशगत परिवर्तनशीलता के कारण नगरों की लुप्त प्राय होती पारंपरिकता, आध्यात्मिकता व सामाजिक- सामूहिकता के साथ नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक संवेदनाओं का क्षरण का यथार्थ वर्णन इनकी कविताओं में मिलता है ।

महानगरों का सामाजिक परिवेश आधुनिक भावबोध से निर्मित है। मशीनीकरण, तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास के बीच मनुष्यों के मध्य सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध और सरोकार पूर्णतया खत्म हो चुके हैं। केदारनाथ सिंह के काव्य संग्रह 'अकाल में सारस' और उसके बाद के काव्यसंग्रहों में महानगरों के भौतिकवादी एवं बनावटी सामाजिक परिवेश की उद्भावना मिलती है।

कवि केदारनाथ सिंह विश्व चेतस कवि रहें हैं, उनकी कविताई किसी सीमा क्षेत्र से बाधित नहीं रही, बल्कि देश-विदेशों की सीमाओं के परे सृजित हुयी हैं। उनकी कई कविताओं में विश्व एक किताब की तरह खुलता है। 'ताल्सताय और साइकिल' और 'सृष्टि पर पहरा' काव्य संग्रह में संकलित कविताओं में वैश्विक सामूहिकता, समरसता, एवं वैश्विक विचारधाराओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट होता है।

कवि केदारनाथ सिंह की काव्य भाषा उनके अपने समाज और परिवेश से ग्रहित हुई है फलस्वरुप इनकी कविताओं के विभिन्न चरणों में परिवेश की परिवर्तनशीलता के कारण भाषिक परिवर्तन को आसानी से देखा जा सकता है। ग्रामीण परिवेश पर आधारित इनकी प्रारंभिक कविताओं में सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों की उपस्थिति मिलती है वहीं बीस वर्ष पश्चात 'जमीन पक रही हैं ' काव्य संग्रह और बाद के काव्य संग्रहों में कस्बे, नगरो और महानगर के व्यापक परिवेश पर आधारित इनकी कविताओं की काव्य भाषा, वैचारिक और बौद्धिक रूप में परिष्कृत होती दिखाई दी।